प्रकाशनार्थ

पटना, 31 अगस्त। आद्री ऑनलाइन व्याख्यान शृंखला के तहत ऐंद्रिला डे ने आज एक व्याख्यान दिया। व्याख्यान का शीर्षक था – ''एशिया-प्रशांत क्षेत्र में शक्ति की अंतर्धारा: भारत और चीन की अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक प्रतिद्वंद्विता के विश्लेषण के लिए गेम थियोरी आधारित खाका''। उस आलेख को ऐंद्रिला डे और देबाशीष चक्रबर्ती (इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेन ट्रेड, कोलकाता परिसर), तथा जुलियन चेज (सिटी यूनिवर्सिटी ऑफ हांगकांग) द्वारा संयुक्त रूप से तैयार किया गया था।

ऐंद्रिला डे का तर्क था कि पिछले दो दशकों में साहित्य के बड़े हिस्से में एशिया के आर्थिक रूप से बड़े दो देश – चीन और भारत – के व्यापार की दिशा और आर्थिक विस्तार पर काफी ध्यान दिया गया है। दोनो देशों के बीच अभी जीवंत तरजीही व्यापार समझौता नहीं है। आरसीईपी (रिजनल कंप्रेहेंसिव इकोनॉमिक पार्टनरशिप – क्षेत्रीय व्यापार आर्थिक साझेदारी) के साथ समझौतों को तोड़ने के भारत के हालिया फैसले के प्रत्यक्ष प्रभाव को भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार समझौते में और भी विलंब के बतौर देखा जा सकता है। यह तय करना महत्वपूर्ण है कि क्या आरसीईपी के अधिकांश देशों के साथ भारत का वर्तमान व्यापारिक संबंध निकट भविष्य में इस व्यापार समूह में उसकी वापसी को आसान बना देगा, या अनुपालन संबंधी संभावित बाधाएं और भय की धारणाएं प्रक्रिया को लंबा खींच दे सकती हैं।

वर्तमान विश्लेषण में आरसीईपी से भारत के हाथ खींच लेने के निर्णय और समूह में दुबारा शामिल होने की संभावनाओं का गेम थियोरी आधारित विश्लेषण किया गया है। आरईसीपी में दुबारा प्रवेश के संबंध में भारत का दीर्घकालिक निर्णय घरेलू मांग में वृद्धि (और रोजगार के अवसरों) और व्यापार संतुलन में सुधार पर निर्भर करेगा। चीन, भारत और आरसीईपी के रणनीतिक विकल्पों पर विचार करते हुए इन निष्कर्षों पर पहुंचा जा सकता है। अगर आरसीईपी के द्वारा टैरिफ सुधार में लचीलापन और गैर टैरिफ उपायों (एनटीएम) में कमी के बारे में भारत की चिंताओं को ध्यान दिया जाता है, तो चीन द्वारा डंपिंग के भय को सीमित किया जा सकता है। अन्यथा, चीन विश्व व्यापार संगठन के साथ असंगत नीतियों को लागू करना जारी रखेगा। देखा जा सकता है कि आरसीईपी में पुनः प्रवेश पर भारत की दुविधा से उत्पन्न जटिलताओं की स्थिति में विश्व व्यापार संगठन के साथ असंगत साधनों का सहारा लेना चीन की प्रभावी रणनीति (अर्थात आकर्षक विकल्प) के बतौर सामने आ सकता है।

व्याख्यान की अध्यक्षता आद्री की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. अस्मिता गुप्ता ने की। व्याख्यान में पटना और देश के अन्य भागों के विद्वानों तथा शिक्षाविदों ने भाग लिया।

(अंजनी कुमार वर्मा)